MAHAKAALNYTIN

रामायण से सद नीति

चौर्यं द्युतं विवादं च मात्सर्यं दंभमेव च।

क्रौर्यं लोभं भयं शोकं निद्यप्रवर्तनम्। ।

वेदविप्रयतीनां च साधुनां मानभंजनम्।

निंदां पैशुन्यमानसं त्यज दुरं स्वतो नृप। ।

Anand ramayan 1.5.115-116

हे राजन! चोरी, जुआ, ईर्ष्या, पाखण्ड, क्रुरता, लोभ, क्रोध, शोक, निन्दनीय काम में प्रवृत्ति, वेद-,विप्र-साधु-सन्यास आदि का मानभंग करना, निन्दा और चुगलखोरी आदि अपने हृदय से दुर कर दें।

O Rajan!theft, gambling, jealousy, hypocrisy, cruelty, greed, anger, sorrow, instinct in blasphemous work, defamation of Vedas, brahmins, saints, renunciations, etc., slander and gossip all of these remove from your heart

Accompany of laxman with Sita Ram before going to vanvas

ज्येष्ठो भ्राता पिता वापि यश्च विद्यां प्रयच्छति।

त्रयस्ते पितरो ज्ञेया धर्मे च पथि वर्तिनः । ।

Valmiki Ramayana 4.18.13

बड़ा भाई, पिता, जो विद्या देता है वह गुरु:- ये तीनों धर्म मार्ग पर स्थित रहनेवाले पुरुषों के लिए पिता के तुल्य माननीय है, ऐसा समझना चाहिए।

The elder brother, the father, the teacher who gives knowledge: These three should be understood as honorable as the father for men who are on the path of righteousness.

यवीयानात्मनः पुत्रः शिष्यश्चापि गुणोदितः ।
पुत्रवत्ते त्रयश्चिन्त्या धर्मश्चैवात्र कारणम्। ।

Valmiki Ramayana 4.18.14

छोटा भाई, पुत्र और गुणवान शिष्य:- ये तीन पुत्र के तुल्य समझे जाने योग्य हैं। उनके प्रति ऐसा भाव रखने में धर्म ही कारण है।

Younger brother, son and virtuous disciple: These three are to be understood as equal to sons. Religion is the reason for having such feelings towards them.

Kidnapping of Bhagwati Sita

कश्चिद्दारापहारान्न परोऽपमानः ।

Hanuman natak 5.62

पत्नी का अपहरण से बढ़ कर और कोई दुसरा अपमान नहीं हो सकता।

There can be no greater insult than the kidnapping of a wife.

Ram vanvas after kidnapping of Sita:-

नारीसंगो नरैस्त्याज्यः सर्वदाऽत्रेति शिक्षयन्।

नारीविषयजं दुखमीदृशं भ्रमकारकम्।।

Anand ramayan 1.7.141

मनुष्य को स्त्री में आसक्त नहीं होना चाहिए। स्त्री विषयक आसक्ति से ही दुख तथा भ्रम का कारण बनता है।

Man should not be attached to woman.Attachment to woman is the cause of suffering and confusion.

How to cope with suffering?

ये शोकमनुवर्तन्ते न तेषां विद्यते सुखम्।

तेजश्च क्षीयते तेषाम् न त्वं शोचितुमर्हसि।।

Valmiki Ramayana 4.17.12

जो शोक का अनुसरण करते हैं, उन्हें सुख नहीं मिलता और उनका तेज भी क्षीण हो जाता है। अतः आप शोक न करें।

Those who follow sorrow do not attain happiness and their splendor fades. So you don't grieve.

Laxman ji says to not lose courage

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात् परं बलम्।

सोत्साहास्य हि लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्।।

Valmiki Ramayana 4.1.121

उत्साह ही बलवान होता है। उत्साह से बढ़कर दुसरा कोई बल नहीं है। उत्साही पुरुष के लिए संसार में कोई दुर्लभ नहीं है।

Enthusiasm is the strongest. There is no greater force than enthusiasm. There is nothing rare in the world for an enthusiastic man.

उत्साहवन्तः पुरुषा नावसीदन्ति कर्मसु।

Valmiki Ramayana 4.1.122

जिनके हृदय में उत्साह होता है, वे पुरुष कठिन से कठिन कार्य आ पड़ने पर हिम्मत नहीं हारते।

Men who have enthusiasm in their hearts do not lose heart when the most difficult task comes.

Shri Ram's opinion on friendship

दुर्लभः सज्जनो लोके निसर्गात् सुकृतस्पृहः ।

तस्य मैत्री जनो लब्ध्वा सततं सुखमश्नुते।।

Bhusundi ramayan 2.75.13

इस संसार में ऐसा सज्जन मिलना दुर्लभ है जो स्वभाव से ही अच्छे कर्मों की इच्छा रखता हो और लोग उसकी मित्रता का आनंद लेते हुए सदैव सुख भोगते हों।

It is rare in this world to find a gentleman who by nature has a desire for good deeds and people enjoy his friendship and always enjoy happiness.

दुखी दुखवतो मित्रं सुखी सुखवतस्तथा।

न सुखी दुखिनो मित्रं न दुखी सुखिनोऽपि च।

Bhusundi ramayan 2.75.16

दुखी, दुखी का मित्र है और सुखी, सुखी का। सुखी दुखी का मित्र नहीं है, न ही दुखी सुखी का मित्र है।

The unhappy is a friend to the unhappy and the happy to the happy. The happy is not the friend of the unhappy, nor is the unhappy the friend of the happy.

मुर्खपण्डितयोर्मैत्री दरिद्रधनिनोस्तथा।

विषयिज्ञानिनोश्चैव लोके हास्याय जायते।।

Bhusundi ramayan 2.75.17

मूर्ख और बुद्धिमान के बीच तथा गरीब और अमीर के बीच मित्रता दुनिया में उन लोगों के लिए भी हंसी के लिए पैदा होती है।

Friendship between the foolish and the wise and between the poor and the rich It is born for laughter in the world even for those who know objects.

एकोऽपि सुजनो मित्रं हरति एव विपदगणम्।

अनेकोऽपि सुसम्पृक्ता विज्ञेया दुर्जना मुधा।।

Bhusundi ramayan 2.75.21

यहां तक कि एक अकेला अच्छा आदमी भी अपने दोस्त से कई विपत्तियां दूर कर लेता है, कई लोग आपस में जुड़े हुए होते हैं और उन्हें दुष्ट मूर्ख समझा जाना चाहिए।

Even a single good man takes away a host of calamities from a friend Many are well-connected and should be understood as evil fools.

पुरुषस्य पुमान् मित्रं स्त्रीणां स्त्र्येव सुनिश्चितम्।

समानसुखदुखश्च समानोदय संक्षयः।।

Bhusundi ramayan 2.75.58

पुरुष, पुरुष का और स्त्री, स्त्री का पक्का मित्र है।

A man is a sure friend to a man and a woman to a woman. Equal happiness and sorrow, equal rise and destruction.

परोक्षे यः प्रियं ब्रुते समक्षेनापि चाप्रियम्।

प्राणैरप्युपकर्त्ता च तद् वै मित्रस्य लक्षणम्।।

Bhusundi ramayan 2.75.59

जो अप्रत्यक्ष रूप से सुखद बातें और सार्वजनिक रूप से अप्रिय बातें बोलता है। जो अपनी जान देकर भी मदद करता है वही मित्र का लक्षण है

He who speaks pleasant things indirectly and unpleasant things in public. He who helps even with his life That is the characteristic of a friend

क्षेमेषु पृथगप्यस्तु संकटे संहतो भवेत्।

संहते नाप्यपचयं तद् वै मित्रस्य लक्षणम्।।

Bhusundi ramayan 2.75.59

भले ही वह अच्छे समय में अलग हो जाए, खतरे में भी एक हो जाए, मिल जाने पर भी कोई क्षय नहीं होता, यही मित्र का लक्षण है

Even if he is separated in good times he may be united in danger Even when combined there is no decay that is the characteristic of a friend

मातरं भगिनीं भार्यां यः पश्येत स्वसुतादिवत्।

समानसुखदुखश्च समानोदय संक्षयः।।

Bhusundi ramayan 2.75.61

A person who looks upon her wife, mother , sister as her own son and so on has equal happiness and sorrow with equal rise and destruction

Shri Ram's opinion on some people whom we shouldn't befriend:-

यः प्रत्यक्षं प्रियं वक्ति परोक्षे त्वप्रिये सदा।

तेन साकं यदा मैत्री तथा किंस्वित सुखं लभेत्।।

Bhusundi ramayan 2.75.43

उस व्यक्ति से मित्रता करके उसे क्या सुख मिल सकता है जो प्रत्यक्ष रूप से तो सुखद बात कहता है लेकिन परोक्ष रूप से हमेशा अप्रिय बात ही बोलता है।

What happiness can one attain when friendship is with him who speaks pleasant things directly but always unpleasant things indirectly

यश्छिद्रा कुर्यादात्मच्छिद्राणि गोपयन्।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित सुखं लभेत्। ।

भुषुण्डि रामायण २.७५.४४

जब कोई अपने छेद छुपा कर उससे दोस्ती करता है तो उसे क्या खुशी मिलती है

What happiness can one attain when he makes friendship with him by hiding his own holes

यः सदा उपकृतिग्राही स्वयं च अनुपकारकः ।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित सुखं लभेत्। ।

भुषुण्डि रामायण २.७५.४५

मित्रता उस व्यक्ति से करके क्या सुख प्राप्त किया जा सकता है जो सदैव उपकार के प्रति ग्रहणशील हो और स्वयं सहायता न करने वाला हो।

What happiness can one attain when friendship is with him who is always receptive to favor and himself unhelpful

यस्तुष्यति उपचारेण स्वयं त्वनुपचारतः ।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित सुखं लभेत्। ।

Bhusundi ramayan 2.75.46

वह जो इलाज से संतुष्ट है लेकिन खुद इलाज के बिना है। जब उससे दोस्ती होगी तो क्या खुशी मिलेगी

He who is satisfied with treatment but himself without treatment What happiness can one find when he is friends with him

यः सत्यभाषणात् कुप्यत्तुष्येन् मिथ्या उपचारतः ।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित सुखं लभेत्। ।

भुषुण्डि रामायण २.७५.४७

जो सच बोलने से क्रोधित होता है और झूठे व्यवहार से संतुष्ट होता है, उसे मित्रता करने पर क्या सुख मिल सकता है।

What happiness can one attain when friendship with him who is angry with truthful speech and satisfied with false treatment

यो न शिक्षयते मार्गं कार्याकार्य विवेचनात्।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित् सुखं लभेत्। ।

Bhusundi ramayan 2.75.48

जो कर्म और अकर्म में भेद करके मार्ग नहीं सिखाता, उससे मित्रता करके क्या सुख मिलेगा?

What happiness can be gained when there is friendship with one who does not teach the path from the judgment of action and inaction

संकटे यस्तु सम्प्राप्ते नैव सार्थं ददाति च।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित् सुखं लभेत्।।

Bhusundi ramayan 2.75.49

लेकिन जो संकट के समय अर्थ नहीं देता, उससे मित्रता करके क्या सुख प्राप्त किया जा सकता है?

But he who does not give meaning in times of distress
What happiness can one attain when friendship with him is attained?

सुसंहतो यः क्षेमेषु विषमेष्वत्युदासताम्।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित् सुखं लभेत्।।

Bhusundi ramayan 2.75.50

मित्रता उस व्यक्ति से करने पर कौन सा सुख प्राप्त हो सकता है, जो अच्छे से जुड़ा हुआ है और जो कल्याण और कठिनाइयों के समय एकसमान भाव रखता है?

What happiness can one attain when friendship is with him who is well-connected and who is indifferent in times of welfare and difficulties

यो मुढः सर्वकार्येषु प्राज्ञः कर्तु च योऽक्षमः।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित् सुखं लभेत्।।

Bhusundi ramayan 2.75.51

उस मूर्ख से मित्रता करने पर क्या सुख मिल सकता है जो अपने सभी मामलों में बुद्धिमान है और उन्हें करने में असमर्थ है?

What happiness can be attained when friendship is with a fool who is wise in all his affairs and incapable of doing them

यः परस्य मनो गृह्नन मनः स्वस्य निगुहति।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित् सुखं लभेत्।।

Bhusundi ramayan 2.75.52

जो दूसरे का मन तो ले लेता है और अपने मन को छिपा लेता है, उससे मित्रता करके क्या सुख मिल सकता है?

What happiness can one attain when friendship with him who takes the mind of another and hides his own mind

विडाल इव नेत्राभ्याम् काणो हश्चश्च यः पुमान्।

तेन साकं यदा मैत्री तदा किंस्वित् सुखं लभेत्। ।

Bhusundi ramayan 2.75.56

किसी को क्या खुशी हो सकती है जब उसकी दोस्ती ऐसे आदमी से हो जिसकी आँखें बिल्ली जैसी हों? (अर्थात अवसरवादी)

What happiness can one have when he is friends with a man whose eyes are like those of a cat (opportunist)

पुरुषेण स्त्रिया साकं मैत्री कार्या न कर्हिचित्।

आरम्भे लाञ्छनं यत्र परिणामोऽस्य कीदृशः । ।

Bhusundi ramayan 2.75.57

पुरुष को कभी भी स्त्री से मित्रता नहीं करनी चाहिए। आरंभ में संकेत कहां है और उसका परिणाम क्या होता है?

A man should never be friends with a woman. Where is the sign in the beginning and what is the result of it?

Shri Ramchandra's friendship with sugriva

त्वच्छत्रुर्मम शत्रु स्यादद्यप्रभृति राघव।

मित्रं ते मम सन्मित्र त्वद्दुखं तन्ममापि च।।

त्वत् प्रितिरेव मत्प्रितिरित्युक्त्वा पुनर्वास तम्।

Ram Katha narsimha puran 50.19-20

सुग्रीव कहते हैं:- जो आपका शत्रु वो आज से मेरा भी शत्रु है और जो आपका मित्र है वो मेरा भी मित्र है। इतना ही नहीं जो आपका दुख है वो मेरा भी दुख है तथा जो आपकी प्रसन्नता है वहीं मेरा प्रसन्नता है।

Sugriva says: - Who is your enemy is my enemy from today and who is your friend is my friend. Not only that, what is your suffering is also my suffering and what is your happiness is my happiness.

Bali's death by the hands of Shri Ram:-

औरसीं भगिनीं वापिस भार्यां वाप्यनुजस्य यः।

प्रचरेत नरः कामात् तस्य दण्डों वधः स्मृतः।।

Valmiki Ramayana 4.18.22

जो पुरुष अपनी कन्या, बहिन अथवा छोटे भाई की स्त्री के पास काम बुद्धि से जाता है, उसका वध करना ही उसके लिए उपयुक्त दण्ड माना गया है।

A man who goes to his daughter, sister or younger brother's wife with lustful intelligence has been considered to be the appropriate punishment.

दुहिता भगिनी भातृर्भार्या चैव तथा स्नुषा।

समा यो रमते तासामेकामपि विमुढधीः ।।

पातकी स तु विज्ञेयः स वध्यो राजभिः सदा।

Adhyatm ramayan 4.3.60-61a

पुत्री, बहिन, छोटे भाई का स्त्री और पुत्रवधु- ये चारों समान हैं। जो मुड़ इनमें से किसी एक के साथ भी रमण करता है, उसे महापापी जानना चाहिए, राजा को उचित है कि उसे अवश्य मार डाले।

Daughter, sister, younger brother's wife and daughter-in-law are all equal. Whoever indulges even with one of these turns should be known as a great sinner, and it is proper for the king to surely kill him.

<u>Bali returning favour to Shri Ram</u>

संत्यज्य सर्वकर्माणि मित्रार्थे यो न वर्त्तते।

सम्भ्रमाद् विकृतोत्साहः सोऽनर्थैर्नावरुध्यते।।

Valmiki Ramayana 4.29.13

जो अपने सब कार्यों को छोड़कर मित्र का कार्य सिद्ध करने के लिए विशेष उत्साहपूर्वक शीघ्रता के साथ नहीं लग जाता है, उसे अनर्थ का भोगी होना पड़ता है।

He who does not leave all his works and hasten to accomplish the work of his friend with special enthusiasm, suffers misfortune.

Maintaining friendship with fellow beings

सर्वथा सुकरं मित्र दुष्करं प्रतिपालनम्।

अनित्यत्वात् तु चित्तानां प्रीतिरल्पेऽपि भिद्यते।।

Valmiki Ramayana 4.32.7

किसी को मित्र बना लेना आसान है परन्तु उस मैत्री को निभाना बहुत ही कठिन है क्योंकि मन का भाव सदा एक सा नहीं रहति। किसी के द्वारा थोड़ी सी चुगली कर दी जाने पर मित्रता में अन्तर आ जाता है।

It is easy to make someone a friend but it is very difficult to maintain that friendship because the mood is not always the same. A little gossip by someone makes a difference in friendship.

Bali enjoying his kingship and alcohol

नहि धर्मार्थसिद्यर्थं पानमेवं प्रशस्यते।

पानादर्थ कामश्च धर्मश्च परिहीयते।।

Valmiki Ramayana 4.33.46

धर्म और अर्थ की सिद्धि के निमित्त प्रयत्न करनेवाले पुरुष के लिए इस तरह मद्यपान अच्छा नहीं माना जाता है, क्योंकि मद्यपान से अर्थ, धर्म और काम तीनों का नाश होता है।

Drinking alcohol in this way is not considered good for a man who strives for the attainment of Dharma and Artha, because alcohol destroys Artha, Dharma and Kama.

Shri Ramchandra advising sugriva to follow dharma and artha and leave kama upasana

हित्वा धर्मं तथार्थं च कामं यस्तु निषेवते।

स वृक्षाग्रे यथा सुप्तः पतितः प्रतिबुध्यते।।

Valmiki Ramayana 4.38.21

जो धर्म-अर्थ का त्याग करके केवल कामभोग का ही सेवन करते हैं, वह वृक्ष की अगली शाखा पर सोते हुए मनुष्य के समान है।

He who renounces religion and wealth and consumes only lust is like a man sleeping on the next branch of a tree.

Angad says to his fellow vanar sena to not lose courage

अनिर्वेदं च दाक्ष्यं च मनसश्चापराजयम्।

कार्यसिद्धिकराण्याहुस्तस्मादेतद् ब्रवीम्यहम्।।

Valmiki Ramayana 4.49.6

उत्साह, सामर्थ्य और मन में हिम्मत न हारना:- ये कार्य सिद्धि करानेवाले सद्गुण है।

Enthusiasm, strength and not losing courage in the mind:- These are the virtues that accomplish the task.

Hanuman in Ravan's darbar

राजन्वधार्हो न भवेत् कंचन प्रतापयुक्तैः परराजवानरः।

Adhyatm ramayan 5.5.30

राजन! प्रतापी पुरुषों को अन्य राज्य के दुत को किसी भी प्रकार नहीं मारना चाहिए।

Rajan! Glorious men should not kill the messenger of another kingdom in any way.

Building ramsetu

खलः करोति दुर्वत्तं नूनं पतति साधुषु।

दशाननोऽहरत्सीतां बन्धनं स्यान्महोदधेः।।

Hanuman natak 13.13

नराधम से सन्धि नहीं करनी चाहिए क्योंकि दुष्ट दुराचार करता है और सीधे व्यक्तियो पर पड़ता है, जैसे रावण ने सीता का अपहरण किया और उसके दण्ड स्वरूप समुद्र को बन्धन प्राप्त हुआ।

Treaty should not be made with the wicked because the wicked commits misconduct and falls directly on individuals, as Ravana kidnapped Sita and the sea got bound as his punishment.

Lanka dahan:-

न सर्पस्य मुखे रक्तं न दष्टस्य कलवरे।

न प्रजासु न भुपाले धनं दुरधिकिरिणि।।

Hanuman natak 9.32

काटने पर न तो सर्प के मुंह में खुन रह जाता है और न डंसे हुए के शरीर में खुन रह जाता है, उसी प्रकार राजा के अनाधिकारी होने पर न तो धन प्रजा के पास रह जाता है और न राजा के पास।

When bitten, there is no blood left in the mouth of the snake or in the body of the bitten, in the same way that when the king is unauthorized, neither wealth remains with the subjects nor with the king.

नद्यश्च खलमैत्री च लक्ष्मीश्च नियतिर्द्विषाम्।

सुकुमाराश्च वनिता राजन्नस्थिरयौवनाः । ।

Hanuman natak 9.19

हे राजन! नदियां, दुर्जनों की मित्रता, सम्पत्ति, शत्रुओं का सौभाग्य, कोमलांगी नवयौवना:- ये चिरस्थायी नहीं रहती।

O Rajan! Rivers, friendship of the wicked, wealth, fortune of enemies, tender youth: - These do not last forever.

<u>Ravan's death</u>

यावानब्धिः कलशशिशुना तावता किं च पीतस्तुल्याकारान्

प्रहरति हरिः किं खगानद्रितुंगान?।

Hanuman natak 14.20

समुद्र भले ही अथाह रहे या पर्वत भले ही बड़े आकार वाले रहें, उनका पतन अल्प आकार वाले व्यक्ति कर सकते हैं।

Even if the sea is bottomless or the mountains are large, they can be overthrown by persons of small size.

इह खलु विषमः पुराकृतानां भवति हि जन्तुषु कर्मणा विपाक ।

Hanuman natak 14.49

प्रत्येक जीवधारी को इस लोक में पहले के किए हुए कर्मों का बाद में अवश्य भोगना पड़ता है।

Every living being must suffer later for the actions he has done earlier in this world.